महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा की भूमिका का अध्ययन

शिक्षा शास्त्र में

पी.एच.डी की उपाधि हेतु

शोध प्रारूप

निर्देशिका

JV'n डॉ. सीमा पाण्डेय

शोधार्थी

JV'n संध्या हाडा

शिक्षा शास्त्र संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

2021

महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा की भूमिका का अध्ययन

प्रस्तावना

प्राचीनकाल में मनुष्य का जीवन अत्यन्त सरल था। उसका सामाजिक स्वरूप भी सहज ही था। मनुष्य ने जैसे-जैसे ज्ञान की प्राप्ति की और इसप्रकार अनुसंधान से जुड़ी उसकी प्रवृत्तियाँ जाग्रत होने लगी। अनुसंधान व विज्ञान की प्रगति ने आधुनिक समाज को जटिल बना दिया। परिणामत: अनेक व्यवसायों की उत्पत्ति हुई। बढ़ती जनसंख्या से हमारे सामने एक प्रमुख समस्या उभर कर आयी है वो है बेरोजगारी की समस्या। बेरोजगारी की समस्या को स्वरोजगार द्वारा दूर किया जा सकता है। इसके लिये व्यावसायिक शिक्षा सर्वश्रेष्ठ विकल्प सिद्ध हुआ है किन्तु व्यवसायिक शिक्षा के प्रति व्यक्तियों में रूचि जाग्रत करना भी महत्वपूर्ण है। व्यावसायिक शिक्षा के बारे में प्राचीन समय से ही अनेक धारणाएँ सामने आने लगी थी पर समय व परिस्थिति के अनुसार इसका स्वरूप अलग ही नज़र आने लगा है। वर्तमान में शिक्षा व व्यवसाय एक दूसरे के पर्याय माने जाने लगे हैं। व्यवसायिक शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो कि समाज परिवर्तन की क्षमता रखती है तथा इस आमूलचूल परिवर्तन के लिए उत्तरदायी सिद्ध हो सकती है। व्यापक रूप में व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत उन सब प्रकार की शिक्षा को शामिल या सम्मिलित किया जा सकता है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है। व्यावसायिक शिक्षा का आधार मात्र व्यवसाय के लिए तैयार पृष्ठभूमि पर किशोरों या युवाओं को लाना ही नहीं होता वरन् उन्हें

समाज के प्रति अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी करना आवश्यक हो जाता है। व्यावसायिक शिक्षा से सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास, सामाजिक मूल्यों एवं सम्बन्धों को सम्भालने की क्षमता एवं भेदभाव रहित वास्तविकता को देखने की शक्ति आती है। यह तथ्य सर्वविदित है कि शिक्षा एवं व्यवसाय एक-दूसरे के पूरक हैं। अधिकांशत: किशोर विद्यार्थी उसी व्यवसाय का अपने भविष्य में चुनाव करते हैं जिस प्रकार की शिक्षा वह अपने शैक्षिक जीवन में प्राप्त करते हैं। वर्तमान शिक्षा नीति में अनेकानेक बदलाव आवश्यक है सत्य यह है कि हमारी शिक्षा नीति औपनिवेशिक हितार्थ थी जिसे वर्तमान समय अनुसार बदला नहीं जा सका है। स्वतन्त्रता के साथ-साथ साक्षर व्यक्तियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि के बावजूद आज बेरोजगारों की संख्या में तुलनात्मक वृद्धि देखी गई है। यदि रोजगार की स्थिति पर दृष्टिपात करें तो हम पाएंगे कि ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक बेरोजगारी व्याप्त है। भारतीय शिक्षा नीति के निर्धारकों ने यदि योजना विकास के प्रारम्भिक वर्षों में ही शिक्षा का व्यावसायीकरण कर दिया होता तो आज यह स्थिति नहीं आती। सरकार को किशोरों में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति चेतना जगाने की अत्याधिक आवश्यकता है। तभी इस स्थिति से सफलतापूर्वक निपटारा हो सकता है। व्यवसायिक शिक्षा का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है। व्यवसायिक शिक्षा के प्रति अभिरूचि का विकास एक व्यक्ति में उस समय होता है, जब वह अपने छात्र जीवन के माध्यमिक स्तर में प्रवेश करता है तथा व्यवसाय का चुनाव व्यावसायिक अभिवृत्ति के अनुकूल हो तो व्यावसायिक सफलता निश्चित मिलती है। इसके लिए व्यावसायिक परामर्श आवश्यक है। व्यावसायिक अभिवृत्ति वह मानसिक तत्परता है जो किसी व्यवसाय के चुनाव में

सहायक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों में शहरी क्षेत्रों के लोगों की तुलना में तकनीकी एवं विज्ञान के प्रति रूचि का सामान्यत: अभाव पाया जाता है। स्वभाव से ही स्वतन्त्रता प्रिय एवं स्वच्छंदता युक्त जीवन ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों में ऐसे व्यवसाय के प्रति रूचि उत्पन्न करता है जिसमें साधारणत: विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं होती। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों में सुविधाओं की कमी एवं धनाभाव के फलस्वरूप उनकी व्यवसायिक शिक्षा के प्रति अभिरूचि प्रभावित होती है। अधिकांश किशोर विद्यार्थी शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करने हेतु विवश हो जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकाशंत: सरकारी विद्यालय ही पाये जाते है, इन विद्यालयों में शिक्षक शहरी विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में आराम पसन्द एवं अनुशासनहीन दृष्टिगोचर होते हैं और इन शिक्षकों के इस व्यवहार का प्रभाव छात्रों पर भी पड़ने की संभावना बनी रहती है, जिससे उनकी व्यवसायिक शिक्षा के प्रति अभिरूचि शहरी छात्रों की तुलना में विकृत हो जाती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर वहाँ की शिक्षा पद्धति एवं लोगों के रहन सहन का सीधा प्रभाव पड़ता है। शहरी क्षेत्रों में विद्यालय व्यवस्था पूर्ण रूप से अनुशासित एवं आधुनिकता लिये हुए होती है जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की व्यवसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में भी अपेक्षाकृत आधुनिक दृष्टिकोण दिखाई देता है। शहरी क्षेत्र के लोगों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में स्वभाव एवं जीवन शैली का अन्तर दिखाई देता है जो कि उनकी व्यवसायिक शिक्षा में अभिवृत्ति को एक व्यापक एवं विस्तृत आधार प्रदान करता है। ग्रामीण क्षेत्रों के किशोर विद्यार्थियों में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में व्यवसायिक शिक्षा के प्रति अभिरूचि के भेद का प्रमुख कारण उचित पाठ्यक्रम का अभाव, माध्यम की

समस्या, उचित दृष्टिकोण का अभाव, प्रायोगिक कार्य सन्तोषप्रद न होना आदि है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के किशोर विद्यार्थियों में व्यवसायिक शिक्षा के प्रति रूचि जाग्रत करने की अभी और अधिक आवश्यकता है। यह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकी है। इसके निम्न कारण हो सकते हैं –

1. उपयुक्त शिक्षकों का ना होना।

2. उच्च अध्ययन हेतु अनेक विषयों का ना होना।

3. ऋण सुविधाएँ अनुपस्थित होना।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

गोखले, एच.वी. ए स्ट्डी ऑफ वोकेशनलाईजेशन एट+2 स्टेज (कोमर्स स्ट्रीम) जी.एस. कॉलेज ऑफ कामर्स एण्ड इकोनॉमिक्स, नागपुर, 2017। अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों के द्वारा व्यावसायिक शिक्षा के स्तर का मूल्यांकन करना तथा शिक्षा के व्यावसायिकरण में शिक्षा सम्बन्धी छवी व समस्याओं का अध्ययन करना है। न्यादर्श के चयन में पाया गया कि न्यादर्श के रुप में नागपुर शहर के दो कॉलेजों का चयन किया गया। सर्वे के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया गया। कक्षा–12 के 40 विद्यार्थियों पर सर्वेक्षण किया तथा आंकडों का एकत्रिण किया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि सामान्य पाठ्यक्रम की तुलना में वर्तमान का व्यावसायिक पाठ्यक्रम उपयोगी था, लेकिन विद्यार्थियों के स्वंय रोजगार व अन्य रोजगारों के निर्माण में असफल था। व्यावसायिक पाठ्यक्रम के साथ कक्षा–12 पास करने के बाद सरकार रोजगार और वित्तिय सहायता जैसी समस्याओं का निवारण नहीं करती। प्रायोगिक प्रशिक्षण के लिये

विभिन्न संस्थाओं और मेहमान व्याख्यान के लिए उपयुक्त व्यवस्था नहीं थी। अध्यापकों को अपने विषय में पूर्ण रुप से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता थी। सरकार द्वारा प्रायोगिक प्रशिक्षण में किये गये निवारण पर्याप्त नहीं थे।

अदवन्त, एस.बी.एन. इवेल्युशन ऑफ वोकेशनल कोर्स इन्ट्रोड्यूस्ड एट दा एट+2 लेवल इन मराठवाडा - ए केस स्ट्डी। रिपोर्ट प्रिपेयर्ड फॉर दा प्रोजेक्ट ए स्ट्डी ऑफ रीजनल इमबेलेन्स इन वोकेशनल एजुकेशन एण्ड मैन पॉवर प्लानिंग इन मराठवाड़ा स्वामी रामानन्द तीर्था रिसर्च इन्स्टीट्यूट औरंगादाद 2017। उद्देश्य में पाया कि मराठवाड़ा में +2 स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के लिये क्या सुविधायें हैं का अध्ययन करना। +2 स्तर पर संस्थाओं द्वारा संचालित व्यावसायिक शिक्षा के लिये प्रशासन, वितित्य व अकादमी जैसी समस्याओं का अध्ययन करना। +2 स्तर पर स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार व्यावसायिक पाठ्यक्रम के निर्माण से सम्बन्धित अध्ययन करना। विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता का व्यावसायिक शिक्षा के रिकार्ड के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन करना। न्यादर्श चयन में पाया कि मराठवाड़ा में कला, विज्ञान व वाणिज्य के 75 कॉलेज थे उनमें से 38 कॉलेजों में व्यावसायिक विषय था। सभी कॉलेजों का प्रतिचयन किया। सूचना एकत्रित करने के लिये प्रश्नावली व साक्षात्कार का प्रयोग किया। निष्कर्षतः पाया गया कि औरंगाबाद जिले के ज्यादातर संस्थायें व्यावसायिक शिक्षा से परिचित थी। मराठवाडा में जयादातर कृषि थी, पांच विद्यालय पशु विज्ञान से सम्बन्धित थे जबकि केवल तीन फलस विज्ञान से परिचित थे। शिक्षण प्रशिक्षण व्यावसायिक विषय की पूर्व जैसी स्थिति थी। सरकार को इन कॉलेजों का संगठन एन स ई आर टी के आधार पर करना चाहिये।

धमनकर वी.के., वोकेशनल एण्ड क्राफ्ट ट्रेनिंग इन मराइवडा – ए केस स्ट्डी रिपोर्ट प्रीप्रयर्ड फॉर दा प्रोजेक्ट ए स्टडी ऑफ रीजीनल इमबैलेन्स इन वोकेशनल एजुकेशन एण्ड मैन पावर प्लानिंग इन मराठवाडा, स्वामी रामानन्द तीर्थ रीसर्च इंस्टीट्यूट औरंगाबाद, 2017। उद्देश्य में पाया कि आई.टी.आई. की आधारभूत लाभों व सम्बन्धित सुविधाओं के अस्तित्व का अध्ययन करना। विभिन्न प्रकार के व्यावसायों में प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन करना। प्रशिक्षण देने वाली संस्थाओं के लिये सुविधओं की आवश्यकता की पहचान कर उसे सहारा देने वाले तथ्यों का अध्ययन करना। सूचना का एकत्रिण करने के लिये प्रश्नावली का उपयोग किया गया। निष्कर्षतः पाया कि 1982–83 में 2524 सीटे उपलब्ध थी जिसके लिये 52,127 आवेदन प्राप्त किये गये थे। 64 में से 26 ट्रेनिंग सेन्टर रोजगार के लिये प्रशिक्षण देने में योग्यता रखते थे। रोजगार प्राप्त करने के लिये जन मुख्य क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाता था वो निम्न थे – आद्योगिक क्षेत्र, फैक्ट्रियॉ, मोटर गैरेज, एयरपोर्ट आदि। 64 में से 37 प्रशिक्षण केन्द्र स्वरोजगार प्राप्त के लिये उत्तरदायी थे। 27 में से 10 ट्रेनिंग सेन्टर रोजगार सुनिश्चित के लिये उपयोगी थे, पांच सेन्टर स्वरोजगार प्राप्त के लिये उपयोगी थे।

केस ए स्ट्डी ऑफ वोकेशन लाइजेशन ऑफ एजुकेशन एट द हायर सैकेण्डरी स्टेज, एम.एस.यू. 2018। उद्देश्य के रूप में पाया गया कि कर्नाटक, गुजरात व महाराष्ट्र में शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिये डचच माध्यमिक विद्यालयों का संगठन कार्य सम्पादन से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन करना। शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिये संस्थागत सुविधाओं, विद्यार्थियों की आकांक्षाओं, अध्यापकों की पृष्ठभूमि, प्राचार्योंकी पृष्ठभूमि,, प्रवेश प्रक्रिया, जीवन चर्या की

प्रकृति, शैक्षिक व कार्य के रुप, पाठ्यक्रम मूल्यांकन प्रक्रिया अािदि का अध्ययन करना। शिक्षा के व्यावसायीकरण के प्राचार्यों, अध्यापकों व विद्यार्थियों के कार्य सम्पादन का अध्ययन करना। न्यादर्श के रुप में महाराष्ट्र, गुजरात व कर्नाटक से 140 उच्च माध्यमिक विद्यालायों का चयन किया गया। नमूने वाली संस्थाओं की व्यवसायिक क्षेत्र में 133 प्राचार्यों, 392 अध्यापकों व 3405 छात्रों का चयन किया गया। उपकरण रूप में पाया कि अध्ययन के लिये जो उपकरण काम लिये गये वो एक साधारण सूचना पत्र, प्राचार्यों की प्रश्नावली, विद्यार्थियों के लिये प्रश्नावली का निर्माण किया गया। आंकडे सर्वेक्षण विधि द्वारा ज्ञात किये गये तथा आंकडों का विश्लेषण प्रतिशत के रुप में किया गया। निष्कर्षत: पाया कि अधिकतर प्राचार्यों के पास कोई तकनीकी शिक्षा नहीं थी। अधिकतर प्राचार्यों के पास तकनीकी शिक्षा में योग्यतायें थी लेकिन कम वेतन के कारण आकर्षित नहीं होते थे। पाठ्यक्रम बहुत ज्यादा था और समय पर पूरा नहीं हो पाता था। प्रायोगिक अनुभव छात्रों को नहीं दिया जाता था इसका कारण था वित्त की कमी व अध्यापकों की सहभागिता में कमी थी।

देशपान्डे, के.एस. जॉब ऑरयन्टेड एण्ड री कन्स्ट्रक्टेड कोर्स एट दा डिग्री लेवल इन मराठावाडा यूनिर्वसिटी, “ए केस स्ट्डी रिपोर्ट प्रिवेयर्ड फॉर दा प्रोजेक्ट, ए स्ट्डी ऑफ रीजनल इम बेलेन्स इन वोकेशनल एजुकेशन एण्ड मैन पॉवर प्लानिंग इन मराठावाडा नन्द तीर्थ रिसर्च इंस्टीट्यूट औरंगाबाद, 2018। उद्देश्य में पाया कि शिक्षण की उपयोगिताओं व प्रयोगशाला सुविधाओं का अध्ययन करना क्षेत्रीय अनुभव प्रकृति के बारे में अध्ययन करना। स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरुप पाठ्यक्रम निर्माण केबारे में पूछताछ करना। पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों, अध्यापकों व माता पिता आदि की प्रतिक्रियाओं का सर्वे

करना। निष्कर्षत: पाया कि यहां सभी इस बात से उलझन में थे कि पाठ्यक्रम का निर्माण बिना किसी तथ्य के किया गया है। पहले से चले आ रहे विषय उत्तम थे, वे बहुत से केसों में प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम से भिन्न थे। अप्रर्याप्त अनुभवी सामग्री के अभाव में अध्यापकों को पाठ्यक्रम चालू करने का पूर्ण न्याय नहीं देना चाहिये। विद्यार्थियों ने बी.एस.सी. में ऐसी विषयों का चयन किया है जो कि स्वरोजगार में सहायक हो सके। विद्यार्थियों की प्रेरणा जॉब को चुनने वाले पाठ्यक्रम को सुनिश्चित करती है। माइक्रोबाइलॉजी के पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की रुचि नहीं थी। विषयों का समन्वय अर्थपूर्ण नहीं था। ज्यादातर जगह विद्यार्थी की शिकायत रहती थी कि फील्ड कार्य में पसन्दी प्रयोगशाला व सुविधाओं का पर्याप्त अभाव था।

समस्या का औचित्य

वर्तमान समय में भारत में यदि बेरोजगारी की समस्या पर दृष्टिपात किया जाए तो हमें यह विदित होगा कि शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या अधिक गम्भीर है। जहाँ शहरों में तकनीकी एवं वैज्ञानिक ज्ञान की सुलभता ने रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं वहीं ग्रामीण क्षेत्र के लोगों में शहरों की ओर पलायन करने की प्रवृत्ति बढ़ी है, जो कि एक जटिल व्यवहारिक समस्या है। भारत में शैक्षिक स्तर का प्रतिशत तो बढ़ रहा है पर बेरोजगारों की संख्या में कोई कमी नज़र नहीं आती है। संख्यात्मक रूप से शैक्षिक विकास हो रहा है। गुणात्मक रूप से नहीं और यह स्थिति विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक भयानक है। सभी प्रमुख विचारों का क्रमश: अध्ययन हमें यह दिशानिर्देश देता है कि शिक्षा सदैव

व्यवसायोन्मुखी हो जो छात्रों को ज्ञानमय तथा गरिमामय जीवन प्रदान करने में सक्षम सिद्ध हो सकें।

वर्तमान में भारत सरकार एवं राज्य सरकार करोड़ों रूपयों के व्यय से महिलाओं को व्यावसायिक शिक्षा में जोड़ने के लिए प्रयासरत है जिसके लिए यह अनेक विकासोन्मुखी योजनाओं का कार्यान्वियन कर रही है।

सरकार के प्रयासों के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार तो हो रहा है, किन्तु व्यवसायिक शिक्षा के प्रति गांव के विद्यार्थियों में उदासीनता एवं अरूचि परिलक्षित होती है जिसका प्रमुख कारण ग्रामीण महिलाओं की मानसिकता एवं सुविधाओं का अभाव है। ग्रामीण परिवेश में आज भी रूढ़िवादिता व्याप्त है।

व्यावसायिक शिक्षा में महिलाओं की रूचि उत्पन्न कर इस समस्या का हल किया जा सकता है। शोधार्थी ने उपर्युक्त समस्या पर शोध करने हेतु पूर्व में हुए शोधों का अध्ययन किया और पाया कि अभी तक महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा की भूमिका पर अधिक कार्य नहीं हुआ है इसी को देखते हुए शोधार्थी ने उक्त समस्या का चयन किया गया है।

समस्या कथन

उपयुक्त सभी समस्याओं तथा वर्तमान व्यावसायिक शिक्षा की सफलता के महत्व को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने अपने निम्न प्रस्तावित शोध विषय का चयन किया है-

महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा की भूमिका का अध्ययन।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

व्यावसायिक शिक्षा

यह महाविद्यालयी स्तर के नीचे प्रदान की जाने वाली शिक्षा है जिसका उद्देश्य किन्हीं विशेष धंधों को सीखने के इच्छुक या सेवारत व्यक्तियों को व्यावसायिक कौशल सिखाना या उसमें वृद्धि करना है। इसके अंतर्गत व्यापार औद्योगिकी, कृषि, तकनीकी शिक्षा आदि आते हैं।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

प्रस्तावित शोध अध्ययन में शोध प्रकरण की प्रकृति के आधार पर निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया जाएगा :-

1. महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र की महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
3. शहरी क्षेत्र की महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
4. कामकाजी महिलाओं में महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
5. गैर कामकाजी महिलाओं में महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध की परिकल्पनाएँ

प्रस्तावित शोध अध्ययन में उपरोक्त उद्द्देश्यों के संदर्भ में निम्नांकित परिकल्पनाएँ निर्मित की जावेगी :-

1. महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. ग्रामीण क्षेत्र की महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. शहरी क्षेत्र की महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

4. कामकाजी महिलाओं में महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

5. गैर कामकाजी महिलाओं में महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

6. ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र की महिलाओं में महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सहसम्बन्ध नही है।

7. ग्रामीण क्षेत्र की कामकाजी महिलायें एवं शहरी क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं में महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

8. ग्रामीण क्षेत्र की कामकाजी महिलायें एवं शहरी क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं में महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

9. ग्रामीण क्षेत्र की कामकाजी महिलायें एवं ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं में महिला सशक्तिकरण में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तावित शोध के विषय को समझकर व अध्ययन से संबंधित साहित्य का अवलोकन करके शोधकर्त्ता इस निष्कर्ष पर पहुँची कि प्रस्तावित शोध के लिए उपयुक्त विधि सर्वेक्षण विधि ही रहेगी। अत: प्रस्तावित शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

जनसंख्या

चर की मात्रा को जिस किसी छोटे से छोटे घटक (अवयव) में ज्ञात करते हैं, उसे इकाई कहते हैं। इकाईयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीष्ट है, जनसंख्या कहते हैं। प्रस्तावित शोध में जनसंख्या के रूप में जयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की महिलाओं को जनसंख्या के रूप में लिया जायेगा।

न्यादर्श

अध्ययनकर्ता को जनसंख्या तथा न्यादर्श भी निर्धारित करना होता है क्योंकि वह सम्पूर्ण विश्व या देश को शोध का न्यादर्श नहीं बना सकती है। वह कतिपय आधारों पर जनसंख्या तथा न्यादर्श का चयन करती है।

शोधार्थी द्वारा न्यादर्श के रूप में 600 महिलाओं का चयन किया जायेगा।

शोध के उपकरण :

प्रत्येक शोध की महत्ता उपकरण पर निर्भर करती है क्योंकि उनकी उपयुक्तता वैधता एवं विश्वसनीयता पर ही प्रदत्तों की विश्वसनीयता एवं वैधता निर्भर करती है। इससे प्राप्त निष्कर्षों की क्षमता द्वारा व्यवहारिक व उपयोगिता निर्धारित होती है। अतः प्रत्येक शोधकार्य में उपर्युक्त उपकरणों का चयन एवं विकास आवश्यक है।

उपकरण दो प्रकार के होते हैं –

- स्वनिर्मित उपकरण
- मानकीकृत उपकरण

- **स्वनिर्मित उपकरण** : स्वनिर्मित उपकरण से तात्पर्य उस उपकरण से है, जिन्हें पूर्व में किसी विशिष्ट उद्देश्य को लेकर बनाया जाता है। बड़े न्यादर्श पर जिनके मानक ज्ञात किये हुए होते हैं, जो शोधकर्ता द्वारा विशेष परिस्थितियों में निर्मित किए हुए होते हैं। इन उपकरणों की विश्वसनीयता व वैधता ज्ञात की जाती है।

- **मानकीकृत उपकरण :** मानकीकृत उपकरण से तात्पर्य उस उपकरण से है जो एक बहुत बड़े न्यादर्श पर उसे प्रशासित कर उसके परिणाम का मूल्यांकन करते हैं और विश्लेषण करते हैं। ये प्रशिक्षण विश्वसनीय व वैध होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा।

1.10 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

परीक्षणों की सहायता से संग्रहित किए गए आंकड़ों से प्राप्त सूचनाऐं जटिल असम्बद्ध तथा बिखरे रूप में होती है। उचित विवेचना के लिए सामग्री को संगठित करना आवश्यक है। इसके लिए सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाता है।

- **मध्यमान**
- **प्रमाप विचलन**
- **टी टेस्ट**

न्यादर्श चयन की विधि

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन किया जायेगा।

आंकडो के स्रोत

प्रस्ततु शोध में शोधार्थी द्वारा आंकडों का एकत्रीकरण का माध्यम प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर होगा

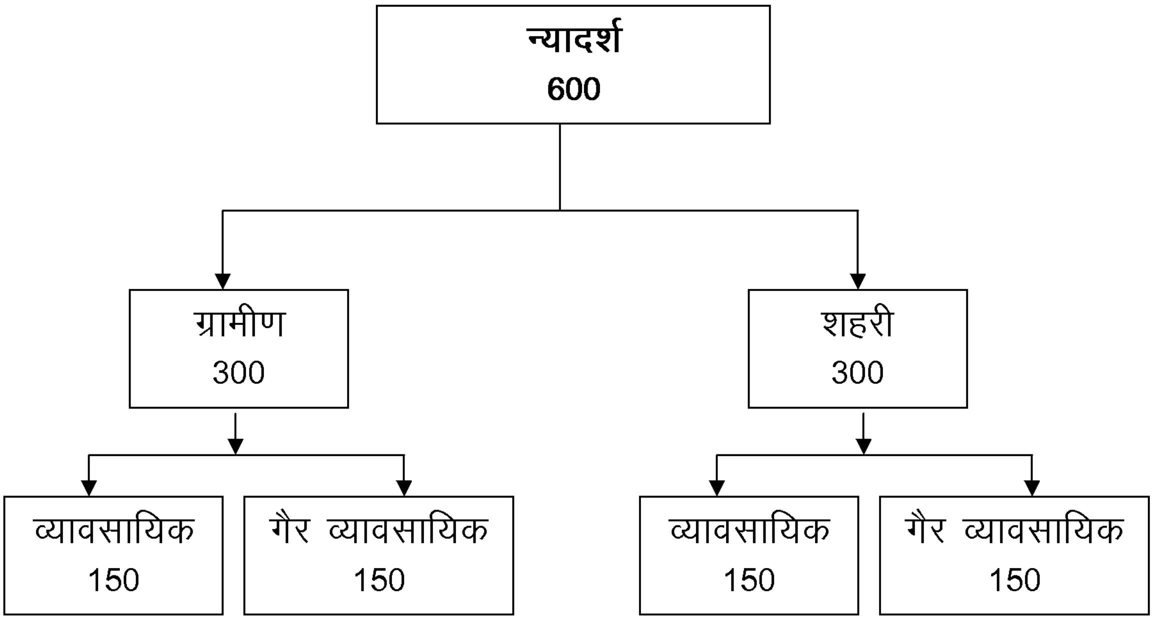

अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रस्तावित अध्ययन में निम्न आधार पर परिसीमन किया जावेगा :-

1. इस शोध कार्य हेतु कुल 600 महिलाओं को न्यादर्श के रूप में लिया जाएगा।

2. प्रस्तावित शोध कार्य में राजस्थान के जयपुर जिले के ग्रामीण व शहरी बी.एड. महिला महाविद्यालयों के क्षेत्रों का चयन किया जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशियल वर्क इन इण्डिया, भारत सरकार
2. खान, एम. ए,, इन्टरप्रेन्यूरिल डवलपमेन्ट प्रोग्राम इन इण्डिया, न्यू देहली कनिष्ठ पब्लिशिंग हाऊस, 1992.
3. खन्ना, एस, के वीमेन एण्ड द ह्मामन राइटस न्यू देहली कॉपनवेल्थ पब्लिशर्स, 1998
4. खन्ना, गिरिजा एण्ड वारहो, इण्डियन वीमेन टुडे, न्यू देहली विकास, 1978
5. इम्पीरियल गजट ऑफ इण्डिया, द इण्डियन एम्पायर, वॉल्यूम–21, द क्लेरेन्डोन प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 1908
6. इन्द्रा, एम, एन, द स्टेट्स ऑफ वीमेन इन इण्डिया, मिनर्वा बुक मद्रास, 1940
7. इन्द्रा, आर, जेण्डर एण्ड सोसायटी इन इण्डियाः रूरल एण्ड ट्राईबल स्टडीज वॉन्यूम–2 न्यू देहली मानक पब्लिकेशन,1999
8. कृष्णराज, मैथ्रेजी, जेण्डर पापुलेशन एण्ड डवलपमेन्ट, न्यू देहली ऑक्सपोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1998
9. कपूर, प्रोमिला मैरिज एण्ड द वर्किग वीमेन ऑफ इण्डिया, विकास. 1974
10. कामकाजी भारतीय नारीः डॉ. प्रमिला कुमार
11. कालिया, अनिल, जेण्डर एण्ड द वर्क पैलेस : ए केस स्टडी एप्रोच, न्यू देहली सैग पब्लिकेशन्स, 1999.
12. कौशिक,विजय, भारत मे राज्य प्रशासन, मलिक एण्ड कम्पनी जयपुर बुक ईनक्लेव, 2001.
13. कैसलर, इवलैयन एस,, वीमेन एण्ड एन्थ्रोपॉलोजीकल न्यू. न्यूनार्क, 1976.
14. केन्द्रीय समाज कल्याण मंडल : स्टेट्स ऑफ सोशियल वेलफेयर बोर्ड :ए स्टडी, नई दिल्ली, 1974

15. कटारिया, सुरेन्द्र, सामाजिक प्रशासन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स. जयपुर. 1997

16. महिलाएं व संविधान, इण्डियन सोशियल इन्स्टीट्यूट, नई दिल्ली, 1993

17. महाजन, बी.एस, वीमेन्स, कन्ट्रीब्युशन टु इण्डिया ईकॉनॉमिक एण्ड सोशियल डवलपमेन्ट, न्यू देहली द्वीप एण्ड द्वीप पब्लिकेशन्स, 1989

18. मोतीपानी, पुष्पा, महिला विकास नई दिशाएं, अहमदाबाद कर्णावती पब्लिकेशन्स, 1998

19. मालवीय ओ.पी. द रोल. ऑफ वीमेन इन इण्डिया द सोशियल एण्ड पॉलिटिकल लाईफ, 1961

20. मेनन, लतीका, वीमेन, एम्पावरमेंट एण्ड चैलेंजेज ऑफ चेंज, न्यू देहली कनिष्क, 1998

21. मजूमदार, बीना, रोल ऑफ रूरल वीमेन इन डवलपमेन्ट, एलाइड पब्लिकेशन्स प्रा. लि, 1970

22. मर्टन आर. के, सोशियल थ्यौरी एण्ड सोशियल स्ट्रक्चर, अमरिंग पब्लिशिंग कम्पनी नई दिल्ली, 1988

23. मिश्रा, ए, एन, एण्ड शर्मा, कुशाल, प्रॉब्लम्स एण्ड प्रोस्पेक्टस रूरल इण्डिया,न्यू देहली वीपल पब्लिशिंग हाऊस, 1923

24. मिश्रा, अशोक, द स्टेटस ऑफ वीमेन लिटरेसी एण्ड एम्प्लॉयमेन्ट प्रौग्रेस ऑफ वीमेन्स, इन्स्टीट्यट ऑफ एडवांस स्टडी, 1996

25. भारत का संविधान

26. पृथ्वी, राजकुमार, स्टेटस एण्ड पॉजिशन ऑफ वीमेन इन एनीसेन्ट, मिडवील एण्ड मॉडर्न इण्डिया, जयपुर, मंगल द्वीप पब्लिकेशन्स, 2001

27. पृथ्वी, राजकुमार, वीमेन इन लॉ एण्ड पॉलिटिक्स, जयपुर मंगल द्वीप पब्लिकेशन्स, 2001

28. पाण्डे, वी. एस. प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, भाग–1 सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाऊस

29. पाण्डे, जयनारायण, भारत का संविधान, सेन्ट्रल लॉ ऐजन्सी, इलाहाबाद, 1998
30. पेने, सर्च, वीमेन हैल्थ एण्ड पॉलट्री, एन इन्ट्रोडक्शन, न्यूयार्क, हार्वेस्टर, वीटसेफ, 1991
31. पेने, न्यूकोगेती, द चिल्ड्रेन इन ह्यूमन प्रोग्रेस, न्यूयार्क, जी. पी. जीत मैन एण्ड सन्स, 1918
32. राजगुरू, ईरादास, वीमेन्स एजुकेशन इन राजस्थान, जयपुर, शोधक, 2000
33. शर्मा, के. एन. भारतीय समाज और संस्कृति, न्यू देहली, 1980
34. शर्मा, के. एल. भारतीय समाज एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली, 1989
35. सेठ, मीरा, वीमेन एण्ड डवलपमेन्ट : द इंडियन एक्सपीरियंस, न्यू देहली, सैग पब्लिकेशन्स, 2001
36. वर्मा, सुधीर, वीमेन्स डवलपमेन्ट : पॉलिसी एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर, आलेख, पब्लिशर्स, 1992
37. वोहरा, आशारानी, नारी शोषण : आईने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, न्यू देहली
38. जोशी, ओमप्रकाश, भारतीय सामाजिक संस्थाएं, पदम बुक कम्पनी, जयपुर 1980
39. जैन, एस,, स्टेट्स एण्ड रोल ऑफ मिडिल क्लास वीमेन, न्यू देहली पूजा पब्लिकेशन्स, 1968
40. जगन्नाथन,बी,, सोशियल वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन आई.आई. पी.ए. न्यू देहली 1968.
41. नागौरी, एस. एल. भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में महिलाओं को योगदान, जयपुर, सुरभि पब्लिकेशन्स, 1997
42. आंगनबाड़ी कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र हेतु संदर्शिका, न्यू देहली, एन.आई. सी.सी.डी, 1986